भारतीय बन्धुओंको खुशखबर।

सर्व भारतीय वन्धुओंको विदित है किहमारे दयालू श्रीमान् सम्राट महोदयने भारतवासियोंको शस्त्र रखनेकी आज्ञा दी है। जिसको सुनकर सर्व भारतवासिओंको आनन्द हुआ होगा। हमारे भारतमें कई दिनोंसे शस्त्रोंका पकडना तो क्या परन्तु रखना भी वंद था और यही कारण है कि इसके बनानेवाले कारीगर भी नहीं रहे। मात्र देशी राज्योंमे शस्त्रोका पकडना अभी तक जारी होनेसे वहांके कारीगर लोग बनाना जानते है। परन्तु वे भी वहुत कम संख्यामें हैं। भारतमें तलवार सिरोहीकी प्रसिद्ध है। अब तलवार रखनेकी आज्ञा होनेसे कई सज्जनोंके पत्र आते हैं कि तलवार तैयार करवाकर भेजे। परन्तु यह कार्य जबतक विशेष लक्ष देकर न किया जाय तब तक ठीक नहीं चलता है। इसलिये हमारे कितनेक मित्रोके अनुरोधसे हमने तलवार, छूरे, कटार, कब्जे आदि शस्त्रोंका कार्यालय खोला है अतएव जिन २ सज्ज-नोंको इन शस्त्रोंकी आवश्यक्ता हो वे निम्न लिखित पत्तेसे पत्र व्यवहार करें।

मैनेजर—

हुन्नर उद्योग कार्यालय।

सिरोही—(राजपूताना)

धन्यवाद

श्रीयुत रायचंदजी लूंबाजी बाली निवासी कि जिन्होंने इस ग्रन्थकी छपाईमें आर्थीक साहायता देकर अपने द्रव्यका सदुपयोग किया है । और ज्ञानका उद्धार कर हिन्दी साहित्य प्रचारमें सहायता दी है । अतएव उसके अर्थ यह कार्यालय धन्यबाद देता है । आशा है कि अन्य बन्धु भी हिन्दी साहित्यके प्रचारमें इनकी भांति अनुमोदन करते रहेगे ।

मैनेजर—श्री हिन्दी साहित्य कार्यालय
आबूरोड

आवश्यक्ता

गुप्त दान दाताओंको विदित हो कि यदि वे सच्चे दान दाता है और अपने द्रव्यका सद्व्यय करना चाहते हैं और साथ ही अपने देशके अनाथ बालक बालिकाओंका रक्षण करना चाहते है । अनाथ अबलाओंका दुःख दूर करना चाहते है और संकटमें पडे हुए भारत भगिनिओं और बन्धुओंको सहायता देना चाहते हैं । दुःखी बीमारोंको अच्छा कर आशीश लेना चाहते हैं । तो वे कृपाकर निम्नलिखित पत्तेसे जो कुछ साहायता भेजना चाहे भेजें ।

मंत्री—स्वयंसेवक मंडल
आबूरोड

प्रकाशकका वक्तव्य

आज मुझे इस बातका हर्ष है कि मैं हिन्दी साहित्य ग्रन्थावलीके पाठकगणोंके सन्मुख एक अति उत्तम और प्राचीन धार्मिक तथा संसारिक कथाका नायक कयवन्ना शाहसे परिचय कराता हूँ कि जो मायाके अन्दर २४ वर्षतक लिप्त हो गया था। मायाकी खूबी संसारको दिखा रही है कि वह क्या नहीं कर सकती है। मात्र स्वआत्मबल ही मायाके दासत्वसे छुटकारा करानेवाला है। स्वआत्मबलसे संसारके कठीनसे कठीन कार्यमें फलीभूत हो सकते हैं। इसी मायादेवीने प्रकाशकको भी कई महीनोंसे एसा तो उलझा दिया कि पाठकोंकी सेवामें अभी तक नियमित ग्रन्थावलीके अंक लेकर उपस्थित न हो सका। इस पुस्तककी घटना श्रीमद् चरम तिर्थंकर श्री महावीर स्वामीके समयकी है कि जिसको आज करीब अढाइ हजार वर्ष व्यतित हुए हैं इतनी प्राचीन कथाओंका अनुवाद करनेका प्रथम साहस लेखककी तरफसे हुआ हैं। अतएव अशुद्धियोंका होना सम्भव हैं। पाठकगण अशुद्धिओंसे आगाही करेंगे तो कृपा होगी। यदि इस पुस्तकको पाठक महाशय अपनाएंगे तो इसी ढंगकी और भी बहुतसी कथाएं प्रकट करनेका साहस किया जायगा।

प्रकाशक—श्री हिन्दी साहित्य—कार्यालय।

कयवन्ना

और

मायाका अपूर्व चमत्कार

प्रथम प्रकरण
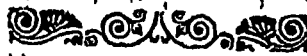
पूर्व देशमें राजग्रही नगरी थी। जिसमें धनदत्त नामक शेठ रहता था जिसके कोई पुत्र नहीं था। भाग्यवश प्रौढ़ावस्थामें उसके एक पुत्रका जन्म हुआ जिसका नाम कयवन्ना रखा गया था। जिसके लक्षण और चेष्टासे यह पाया जाता था कि वह विवेक विद्या और नीतिमें निपूण होगा। प्रकृतिका यह सदा नियम है कि आत्मा जिस २ गृह (काया) में रहता है और जैसे २ कर्तव्य करता है उसी अनुसार पुनर्जन्ममें वे ही अनुभव दूसरे गृहमें प्रवेश करते समय साथ चले जाते हैं। इस लिये बहुतसे मनुष्य जन्मसे दुष्टताकी तरफ झुकते जाते हैं। और बहुतसे भक्ति नीति और देश सेवाकी तरफ अपना लक्ष खिंचते रहते हैं। इसी नियमानुसार कयवन्ना बालवयसे ही नीति और वैराग्यकी तरफ झुका हुआ था और वह मात्र अभ्यास, शुभ भावना, और वैराग्यमें ही आनन्द मानता था। धनवानोंका पुत्र होनेपर भी कनक कामिनीकी ओरका प्रेम तनिक मात्र भी न था। उसका मन यहां तक भद्रिक था कि वह अपनी देवांगना

समान स्त्रीकी तरफ तीरछी नजरसे भी नहीं देखता था और न उसकी स्त्रीके हाव भाव और श्रृंगार भी उसके मनको आकर्षित कर सके। जब स्त्रीने देखा कि कयवन्ना उसकी परवा भी नहीं करता है। जयश्री को विकार और कामदेव सताने लगे। यहां तक कि मन्मथका मंथन सहन न कर सकी और बेबस होकर अन्तमें अपनी सासको जो न कहने योग्य बात थी उसको भी विवेक छोडकर कहनेको आरूढ हुई।

सास नियमानूसार बहूकी माताके समान होती है। क्योंकि जन्मदाता माताको तो पतिके सुखके लिये छोडकर सासके आधार पर रहती है। तो जो स्त्री एसी बहूको अपनी पुत्रीके समान न गिने तो उसके जैसी दुष्टा और कौन होगी? क्योंकि उसने (बहूने) सासके पुत्रके सुखके लिये अपना देश नगर गृह और कुटुम्ब छोडकर प्रदेशमें आ उनके चरणोंमें रहती है। आजकलके गृहस्थाश्रमको देखनेसे मालूम होता है कि जिस घरमें एक वक्त भोजनको भी न हो तो भी सास अपने लडकेकी स्त्रीको बहु या बेटी न समझ कर एक सेवकिनसे बदतर समझती है मानो यह बजारकी खरीदी हुई भाजी है। वह उसको ताने लगानेमें प्रत्येक संबोधनमें असभ्य शब्दोकी बौछार करनेमें, चाकरानीसे भी विशेष शक्तिके उपरान्त मजदूरी लेनेमें और तरह २ के जुलम गुजारनेमें कुछ भी बाकी नहीं छोडती है। धिक्कार! एसी सासको कि जिन दुष्टाओंके आधीन एक सच्चे, सरल, और विनयवंत बालाओं (नव वधूओं) का जीवन सौंपा जाता है कि जिससे उनका जीवन भ्रष्ट होकर वे अपना जन्म निरर्थक बिताती है।

इतना ही नहीं बलकि वे अपने पति वा पूत्रकी सेवा सश्रुषा भी अच्छी तरह नही करने पाती है बलकि जिस समय वे (वधूएं) जब सास बनती हैं तो वे भी वही आदतें सीख जाती है और अपनी नववधूओ पर दुगना जूलम गुजारती है।

पाठकगण! कयवन्नाकी माता जयश्रीकी सास ऐसी वैसी स्त्री नहीं थी परन्तु वह अपने पुत्र वधूके साथ पुत्र वात्सल्यता रखती थी बलकि यहां तक उसकी हिदायत थी कि कोई भी छोटेसे छोटा दुःख क्यों न हो अवश्य अपने साससे कह दे और जिसको वह बहुत प्रेमके साथ दूर करनेका प्रयत्न किया करती थी।

पाठकोंको भलिभांति विदित ही है कि जब कन्या बाल्या-वस्थासे यौवनावस्थामें प्रवेश होती है और सम्पूर्ण अवयवोंकी वृद्धि होकर कामदेव सताता है उस समय यदि उसकी इच्छा पूर्ण न हो तो उसकी क्या हालत होती है उसका स्वयं विचार कर लें क्योंकि यह बात प्रत्येक गृहस्थीको अनुभव सिद्ध होती है। यद्यपि जयश्रीको पुत्रवधू होनेके पश्चात और कोई भी दूःख मनमें हो तो मात्र इसी बातका था कि उसका पति उससे प्रेम नहीं रखता था।

एक दिन जब जयश्री का हृदय भर आया तो उसने अपना गुप्त दूःख लज्जाको एक कीनारे रखकर अपनी सासको कहनेका साहस किया और जिसको उसकी सासने सुनकर अपने मनमें खेद कर कहा " बेटी तेरे इस दुःखको मैं अच्छी तरह जानती हूं परन्तु उसका उपाय क्या हो सकता है? क्योंकि मोरके सुन्दर पर को कोई चित्रकार क्या तैयार करता है? क्या हंशको

पद्मिनीकी चाल चलना कोई सिखाता है ? क्या चोरको चोरी कराना कोइ सिखाता है ? नहीं यह तो स्वाभाविक ही होता है इसका कोई उपाय नहीं हैं ।

जब जयश्रीने उपरोक्त उत्तर सुना तो बहुत घबडाई और विचार करने लगी कि क्या करना चाहिये ? अन्तमें उसने हिम्मत रखकर अपनी माससे कहा कि ये सब बाते व्यर्थ है । पराई पीडाका दुःख किसको मालूम हो सकता है । यदि स्वयं अपनी पुत्रीके उपर एसा संकट आ पडता तो हजारो इलाज करनेको तत्पर होती परन्तु अन्य प्रदेशसे लाई हुई पुत्र वधूकी दया कौन देखे ? नहीं तो आप जानती है कि संसारमें क्या असाध्य है ? लोहे जैसी कठीन पदार्थका पानी कर मन माफिक वस्तूएं तैयार की जाती है तो कौमल मन वाले मनुष्यको किसी तरफ मोडने या घूमानेमें क्या अशक्य है ?

इस पर सासको मालूम हुआ कि पुत्र वधूको बहूत दुःख है और जो कुछ कहा है वह सत्य है । अब इसका क्या उपाय करना चाहिये इसपर विचार करने लगी । साथ ही पुत्र वधूको यह कह कर शांत किया कि बैटी ! गभराओ मत मैं तेरे श्वसुरसे मिल सम्मति मिलाकर तेरे दुःखको दूर करनेका कुछ न कुछ इलाज जरूर करूँगी । जयश्री की सास वहांसे शीघ्रता पूर्वक उठकर अपने पतिके पास गई और पुत्र वधूके दुःखका वर्णन कर निवेदन किया कि इसका कुछ न कुछ उपाय जरूर करना चाहिये । उस पर धनदत्तने बहुत विचार किया परन्तु उसके ध्यानमें कुछ भी नहीं आया । अंतमें चिरकालके चिंतवनके पश्चात्

वसुमतिने एक उपाय सोचा और अपने पतिकी ओर ध्यान देकर कहने लगी। प्राणनाथ! पुत्र वधूका यह वाक्य सत्य है कि संसारमें कुछ भी असाध्य नहीं है। मेरे ख्यालमें तो पुत्रको अयाश और रसिक बनानेको किसी इश्की युवाकी संगत करा देना उचित है और उसको इसके वास्ते जितना खरचा चाहिये दिया जाय फिरतो थोड़े ही दिनोंमें कयवन्नाकी अयाशी देखे किस कदर बढ़ जाती है? यद्यपि यह राय धनदत्तको अच्छी न लगी परन्तु स्त्री हटके आगे उसका कुछ भी न चला। आखिर यही उपाय दम्पतीकी कमिटीमें मंजूर हुआ और साथ ही शीघ्रतया कृत्यमें लाया गया। अर्थात एक इश्की युवाको ढूंढ़ निकाला और जिसमें कोई परिश्रमका काम न पड़ा क्योंकि ऐसे रंगी, भंगेड़ी, शराबी और इश्की मनुष्योंकी संगत सहजमें ही हो जाती है परन्तु अच्छी संगतका मिलना कठिन है।

जब कयवन्नाके संगतमें इश्कीलालका साथ हो गया तो प्रथम साहित्यकी बातें शरू की और ऋतुओके वर्णनकी तरफ लक्ष खिंचा और वह भी महाकवि कालीदास* जैसे प्रख्यात कविके ऋतु वर्णनके विषयके मीठे स्वादका फिर क्या पूछना? इतना ही नहीं परन्तु इश्कीलालने वर्षाऋतुमें बाग बगीचोंकी हरियालीके बीचमें मंगला मुखियोंके द्वारा ऋतु वर्णन संगितमें तबले सुरंगीकी ठनक और तानके साथ सुनाने लगा और जिसका

---

* इनका रचित घनश्याम संदेशवा जिसका कि हिन्दी अनुवाद श्री हिन्दी साहित्य कार्यालय आबूरोडद्वारा प्रकट होचुका है जो मात्र ।=) में उपरोक्त कार्यालयसे प्राप्त हो सकती है देखिये।

असर उस पर इतना हुआ कि उसको ऐसे गायनके सुने विना चैन नहीं पडता था और साथ ही में मंगला मुखीके हावभाव इशारे और तिरछी नजरके तीरने कयवन्नाके रोम रोममें एसा असर किया कि अंतमें उस योगी और महान्शांत स्वभाववालेको काम देवने अपने पूर्ण अधिकारमें कर लिया। अब तो योगी कयवन्ना भोगी हो गया। प्रेमकी बातोंका बोछार शरू हुआ। वैश्याकी संगतसे उसका प्रेम स्त्रीके साथ इतनातो बढ गया कि स्त्री विना एक पल भर भी पृथक नही रह सकता। उस योगी कयवन्ना पर मदोनमत्तने इतना तो अधिकार जमादिया कि उसको मदिरा देवीका भी दास बनना पडा क्योंकि वैश्याओके प्रेमियोको अकसर मदिरा देवी की सोहबत भी रखनी पडती है कि जिससे सफाई होनेमें कुछ बाकी न रहे इस प्रकार अब कयवन्ना पूरा आशिक हो गया है।

पाठकगण! आप अच्छी तरह जानते हैं कि संगत भली या बूरी अपनी असर किये विना नहीं रहती हैं देखीये छाछके थोड़े से बिन्दू अथवा निमककी छोटीसी कंकरीकी संगतसे अमृत जैसी दूधकी क्या हालत हो जाती हैं? सुगंधीयोंमें महान् मस्त किस्तू-रीके ढेरमें जरासा लेहसनकी संगतसे सारा ढेर दुर्गंधमय होजाता है।

पाठकगण! कहां मैनावती गोपीचंद राजाकी माता और कहां वसुमति कयवन्नाकी माता इन दोनोका मुकाबला करते हैं तो एक दूसरेसे विरुद्ध पाई जाती है। क्योंकि मैनावतीने अपने पुत्रको जो नानाप्रकारके संसारिक भोगोंमें लीन हो रहा था उसको उपदेश द्वारा चैतन्य किया कि एक दिन तू कालका ग्रास

हो जायगा साथ ही इस बातका शोक करती हुई आंसु बहाकर अपने पुत्रको वैराग्यवंत किया याने महान् भोगीको महान् योगीमें पलट दिया। माताकी शिक्षाका कितना असर अपनी संतान पर होता है: उसका साक्षात् यह दृष्टांत है। शिक्षित माताके संस्कारसे राजा गोपीचंद अपने मनुष्य देहका सार्थक और आत्माका कल्याण कर सका। जब कि वसुमतिने अपने पुत्र कयवन्नाको जो कि वैराग्यवंत था उसको भोगी बनाकर संसारका भ्रमण कराया। एसा क्यों हुआ इस बातका निर्णय सिवाय समर्थ ज्ञानीके अन्य कोई भी नहीं बता सकता। हम आप सब तर्क करते हैं क्योंकि मायाके गोदमें खेलते हैं और उसकी मायामय जीवनमें मनुष्य-देहका कुछ भी सार्थक नहीं कर सकते हैं।

द्वितिय–प्रकरण

संसारमें विद्वानों और उपदेशकोने साहित्य और प्रेमके नामसे दुनियाके **पथकोको सिधे रास्ते जाते हुए** उल्टे रास्ते जानेका मार्ग बताया है और उनके दिमागमें खलबली उत्पन्न करनेवाले गद्य पद्य बनानेकी तिव्र ईच्छाने असभ्य जैसी गोष्ठीका पाठ रखनेमें और शृंगारिक कविता बनानेमें मालुम नहीं क्या लाभ प्राप्त करेंगे। संसारमें प्रेम बिना घडीभर भी नहीं चल सकता क्योंकि प्रेम ही जगतका सिद्धान्त है। एसी युक्तिओं

द्वारा संसारी जिवोंके मनमें ठसाकर प्रेमके नामसे विषय विकारमें जबरन प्रवेश करा देनेवाले उपदेशकोंने गिरे हुए संसार पर चाबुकोंका प्रहार किया हैं।

कयवन्नाको साहित्यके शोकसे प्रेममें और प्रेमसे इश्कमें और इश्कसे व्यभिचारमें और व्यभिचारसे अनाचारमें लगानेमें उसके अयाशी मित्र फलिभूत हुए। और अयाशी मित्रोंने अपना जेब लबालब किया साथ ही अपनी इन्द्रिओंको भी खूब पुष्ट किया।

अब कयवन्ना एक वैश्याके घर दिन रात रहने लगा। वैश्याका नाम देवदत्ता था। यद्यपि वह नाचनेका व्यवसाय करती थी परन्तु सुशीला और सुद्धाचारिणी थी और साथमें अपने शियलको आंच न आने दी थी। एसे गुण वैश्याओंमें होना असम्भव सा है परन्तु कयवन्नाके भाग्यमें एसी वैश्यासे संगत हुई। एसी सुस्संकारवाळी नवयुवति वेश्याके साथ कयवन्ना अमन चेनसे दिन व्यतित करने लगा। जब कभी खर्चेकी आवश्यक्ता पड़ती थी तो वह अपने घरसे मंगवाता था। वसुमति बड़े हर्षके साथ द्रव्य भेजा करती थी। इस धनसे कयवन्ना और देवदत्ता खाने पिने गान तान और खेल कूदमें चकचूर रहते थे। धनके द्वारा प्रतिदिन नई २ क्रिडाएं करते थे। इस प्रकार आनन्द युक्त क्रिड़ाओंमें लिप्त कयवन्नाको मालूम नहीं रहता था कि किधर सुर्य उदय होता है और कहां अस्त होता है ?

एक दिन कयवन्ना और देवदत्ता दोनों शरद पूर्णिमाकी रात्रिको अटारीमें बैठे थे। प्रकाशमयचन्द्रके साथ देवदत्ताका

मुख चन्द्रकी बराबरी करता हुआ देख कयवन्ना मुग्ध हो रहा था। इतनेमें नीचेसे नोकरने आवाज दी। मालकनका हुक्म होते ही एक पुरुषको कयवन्नाके आगे लाया गया। पाठकगण! ये पुरुष कोई नहीं लेकिन वसुमतिका भेजा हुआ नोकर था। नोकर सुविनय प्रणाम कर वसुमतिका संदेशा कहने लगा:—

नोकर—सेठजी! माताजीने आपको आशिंर्वाद दिया है। और कहा है कि बारा २ साल हमको छोड़े हुए हो गए तो भी तुम घरकी ओर देखते ही नहीं क्या तुम्हारे जैसे लायक और योग्य पुत्रको एसा करना युक्त है। अब तो कृपाकर घर पर आओ। हम तुम्हारे माता पिता वृद्ध हुए हैं हमारे शरीरका अब कुछ भरोसा नहीं और अपने घर दुकानका धंधा संभालनेवाळा तुम्हारे सिवाए दूसराकोई नहीं है इस बातको क्या तुम नही जानते?

कयवन्ना—अरे मूर्ख तू क्या बकता है आश्चर्यमें लीन हुआ कयवन्ना कहने लगा। क्या मैं इस घरमें बारा सालसे रहता हूं? नहीं। नहीं। मैं शायद ही यहां पर थोडी रात रहा हूंगा। मेरी मातुश्री बहुत प्रेमवाली होनेसे पुत्रके वियोगको सहन न कर सकनेसे बारा रात्रिको बारा साल कहती होगी।

नोकरको बडा ही आश्चर्य हुआ और निवेदन किया "सेठजी माताके प्रेमने बारा दिनके बारा साल बनाए यह बात एसी नहीं है। परन्तु आपको भ्रममें डालनेवाली मायाने बारा सालके बारा दिन किये हैं एसाही मालूम होता है। रात दिन रंग रागमें मस्त

रहनेसे अगर आप बारा सालको बारा मिन्ट माने तो भी आश्चर्य नही है ”।

कयवन्ना–अगर कभी एसा भी हो तो भी तुझको इसके साथ क्या गरज है। जाओ ! माताजी और पिताजीको मेरी वंदना कहना और प्रार्थना करना कि थोडे दिनों बाद मैं आपके दर्शन करूंगा। ”

नोकरने कयवन्नाको प्रणाम करके अपना रास्ता मापा और धनदत्त सेठके घर आकर सब हाल कहा जिसको सुनकर सेठजी उदास हुए और वसुमतिको कहने लगे। क्यों देख ? मैं कहता था कि इश्कीलालाओंकी संगतका फल बूरा होगा। यह कदापि भी अच्छा हो नहीं सकता। आज बारा साल हो गये पुत्र घर आता ही नहीं। कुलकी लज्जाको छोडकर बेशरमोंकी तरह दिन रात वेश्याके घरमें ही रहता है। ये उपाय करानेमें तूने और बहूने क्या फल निकाला ? अब इस दर्दकी औषधी ढूंढ निकालो।

सेठ सेठाणी और वहू तीनोंने बहुत विचार किया मगर विगडी हुई बातको सुधारनेका उपाय एकको भी न सूझा। सेठ सेठाणी इसी चितारूपी आगमें दिन२ सुकने लगे यहां तक कि इसो चिन्ता ही चिंतामें थोड़े दिनों बाद इस मायावी आळी दूनियासे अपना डेरा डंड़ा उठा लिया यानि कालके ग्रास हुए। अब मात्र जयश्री अकेली ही रह गई। घरबार बरबाद होने लगा कुछ धन नोकर चाकर चोरी कर ले गये। कुछ सगे सम्बन्धीओंने हजम कर लिया। कुछ पतिकी आज्ञानुसार पतिको भेजा इस प्रकार सब उड़ गया। जयश्रीके पास अब कुछ भी न रहा कि वह अपना

जीवन चला सके। अंतमें सूत कांतनेका धंधा हाथमें लिया और इससे अपना गुजारा करने लगी। जयश्रीका किया हुआ उसीको भुगतना पड़ा जयश्रीके साथ वही बात बनी कि "लेने गई पूत खो आई खसम" जब कि जयश्रीके भाग्यमें दुःख ही है तो सुख कहांसे मिले। हरेक प्राणी सुखकी इच्छा करता है परन्तु सुख और वैभव तो पूर्व कृत शुभ कर्मके प्रभावसे ही मिलता है। जिसने पूर्व जन्ममें कुछ सुकृत नहीं किया वह कभी भी सुखी नहीं हो सकता। बस निश्चय यही बात सिद्ध है कि सुख दुःखके मिलनेमें, धनवान और कंगाल होनेमें बुद्धिमान और मुर्खाचार्य होनेमे कर्मकी प्रधानता है।

तृतीय–प्रकरण।

अब जयश्री अपने कियेका पश्चाताप करती हुई विचार करने लगी कि अब क्या करना उचित है? बिचारनेसे एक युक्ति सुझ आई कि मेरे पास एक तोता है उसकेद्वारा संदेशा भेजूं। यह विचार कर तोतेकी पास गई और कहने लगी। हे तोते! प्यारे तोते! सुंदर तोते। तेरे आगे दामन बिछाकर विनंति करती हूं कि तुमने इतने दिनों तक अपने मालिकका निमक खाया है। यदि उसको हलाल करना हो तो अभी उड और मेरे प्रिय पतिके पास जा। मेरा संदेशा उसको सुनाकि आपकी अबळा आपके विरह अग्निसे जल रही है. बारा २ सालसे निंदको गिरवी रखी है और शृंगारको देश निकाला दिया है।

प्रिय आपको मैंने हंस जानकर ग्रहण किया था मगर कौआ निकला। सुवर्ण जानकर हाथमें लिया मगर पितल निकला। अन्तमें मेरेको और कुल लाजको छोड वैश्याके रागी बने हो। हे नाथ! यदि यह सुनते हुए बूरा लगे तो क्षमा करना मैं प्रेमी हूं। क्या प्रेमीको प्रेमीकी खबर न लेनी उचित है, कदापि नहीं। प्यारे मेरे हजारों अपराध है परन्तु आपतो गुणिजन है. कृपाकर दर्शन दो।"
अरे तोते यदि तू यह संदेशा मेरे प्रियतमको पहूंचायगा तो मैं तेरी चूंचको सुवर्णसे मढा दूंगी। उडनेकी तकलीफ सहन करने वाली तेरी पांखोंको दुधसे धोउंगी। जाओ प्यारे तोते। उडो और अपनें नाथको मेरा दंडवत प्रणाम कहके मेरा उपरोक्त संदेशा कहो। विशाल झरोखेके मध्यमें जब जयश्री पिंजरेके पास खडी होकर तोतेको संदेशा कह रही थी उस समय विशाल गृह भी सुन्दर वस्तुओंके नाश होनेसे उजाड (वैरान) जैसा भासने लगा, और साथमें उसके दुःखसे दुःखी हुआ। मानो वे सुन्दर घर भी भयानकसा माल्रम होने लगा। तोता भी उसके दुःखसे दुःखी होकर आंखोंसे अश्रु बहाने लगा। इससे जयश्रीके दुखमें और भी विशेषता हुई ताहम भी अपने फटे टूटे वस्त्रसे तोतेके अश्रुको पूछने लगी। इतनेमें जयश्रीकी बांइ आंख फुरकने लगी। बाईं अंगका स्फूरकना स्त्रिके लिये शुभ सुचक है। इतना निमित्त मिलनेपर जयश्रीको कुछ ढाढस बंधा और अपने आंसुको अपने कपडेसे पूंछकर ज्योंही आँख खोलती है त्योंही अपने आगे एक सादे पोशाकमें सज्ज हुए पुरुषको देखा। परन्तु उसका

मुख कुमलाया हुआ था। पश्चात परूपी नदीमें डूबा हुआ था और साथमें आंखोंसे आंसूओंकी धारा चल रही थी। ऐसे पुरुषको अपने सामने खडा हुआ देखकर जयश्री थोडी देर तक स्तब्ध रहकर विचार करती है। हां ये क्या! कौन? कहांसे? किस प्रकार? यह पुरुष अन्दर आया। जयश्री मन ही मन विचार करती ही थी कि आया हुआ पुरुष कहने लगा कि हे ललने! तुझको शंका नही करना चाहिये। मैं वही हूं! मेरे कर्म मेरे ही काम आए। अब मैं पश्चाताप करता हूं। तेरा आश्रय लेने आया हूं। इस प्रकारसे कहते हुए शरमके मारे मरे जाता हूं। मेरा कलेजा फटता है। बस इससे आगे आनेवाले पुरुषका हृदय भर आया इस कारण सिवाय रोनेके और कुछ भी न कह सका। जयश्रीने उस पुरुषको झटसे पहिचान लिया और शीघ्र ही उसका हाथ अपने हाथमें लेकर शांतवन किया और पंखेसे पवन डालकर कहने लगी कि अफ़सोस न करे कर्मकी गती न्यारी है।

पाठकगण। नवीन आए हुए पुरुषको आप पहिचान ही गये होंगे। यह दूसरा कोई नहीं परन्तु अपनी कथाका नायक तथा जयश्रीका नाथ कयवन्ना था।

अफसोस सद अफसोसके उदगार निकालती हुई कहने लगी कि मैने कभी यह नही जाना था कि आपको रंगीला बनवानेमें एसा परिणाम आवेगा। अब आपको लेश मात्र भी दुःख नहीं मनाना चाहिये। क्योंकि यह सब दोष मेरे ही है! प्राणनाथ! अब आप साहस रखे। बिती बातको याद न करे पिछली भूलोंको

भूल जावे और अब उसको सुधारे अब बाकी रहा हुआ जीवन आनन्दमय और धर्ममय पूरा हो ऐसा कार्य करना उचित है।

कयवन्नाने उत्तर दिया कि हां ठीक है अब हम लोगएसा ही करेंगे मेरा अन्तका आश्रा तूं ही है। मैंने तुझको भूल कर वैश्याकी संगतमें रात दिन गुजारे। उसका घर धनसे भर दिया तो भी अंतमें उसने मुझको दगा दिया और लात मारकर बाहिर निकाल दिया।

पाठकगण याद रखें कि वैश्याओके साथ मित्रता करनेवालोका हाल कयवन्नाकी भांति होता है वैश्या न तो आजतक किसीकी बनी है और न बनेगी वह पैसोंकी यार है। जिसने टका दिया उसीकी बनती है। क्या भंगी क्या चमार, क्या ब्राह्मण, क्या क्षत्री क्या वैश्य सब जातीको पवित्र करनेवाली और एक जाती करनेवाली शक्ति है। इसलिये सज्जनोंको उचित है कि नरककी खान एसी वैश्याका मन, बचन और कायासे परित्याग करे।

कयवन्नाने अपने उपर गुजरी हुई हालत अपनी प्रियासे विस्तारपूर्वक सुनाई। यद्यपि देवदत्ता स्वयं सुशीला थी मगर उसकी वृद्ध माता जो पक्की वैश्या थी वह पैसेकी संबंधी थी उसने जब देखा कि कयवन्नाके पास अब कुछ धन नही रहा तब उसने उसको घरसे हांक निकाला।

कयवन्नाको घरसे बाहिर निकालनेसे पहिले मा बेटीमें बहुत सा वादविवाद हुआ। वृद्ध गुणिकाने कयवन्नाको निकालनेके लिये बहुत कहा मगर पुत्रीने इस बातको मंजूर नहीं किया क्योंकि यद्यपि वह वैश्या पुत्री थी परन्तु शीयलवती थी सिवाय

कयवन्नाके उसने अपना मालिक नही बनाया था अतएव उसको छोडना कब भाता। देवदत्ताको स्वार्थ क्या चीज होती है मालूम नही था इसका पवित्र प्रेम तो कयवन्नासे था न कि इसके धनके साथ था और इसी लिये बारा साल बितने पर भी उसको बारा दिन मालूम हुए। बरना वैश्याओके घर बारा साल तक एकही प्रेमकी तानमे रहना असम्भव है। पैसोंका प्रेम बारा साल तो क्या परन्तु बारा महिना भी रहना मुशकिल है।

देवदत्ता और उसकी माताके बीच प्रतीरोज कयवन्नाको निकालनेके वास्ते वादविवाद होता रहे यह कितनेही महिनो तक तो मावेटीकी आपससे चुपकेसे वादविवाद होता रहा बाद कयवन्ना सुने इस तरहसे वादविवाद होता रहा अन्तमें बुढिया वैश्याने कयवन्नाके दिलको उमाडनेके लिये जोर २ से पुकार कर कहने लगी कि इस बदमाशको कहां लज्जा हैं? मावाप मर गये तो भी यह घरको याद भी नहीं करता है। और न घर सम्मालता है। कयवन्नाको इतना ही सुनाना काफी था क्योंकि बुद्धिमानोको संकेत मात्र भी बहुत है। उसी समय कयवन्नाको बूरा लगा और वैश्याका घर छोड़ कर अपने घरका रास्ता ढूंढ़ा और जिस समय जयश्री तोतेको संदेशा कह कर भेजती थी और बाई आंख स्फूरी थी, उसी समय कयवन्ना अपने घरमें आ पहूँचा।

एक दिन पत्नी अपने दुःख सुखकी बातें कर रहे थे और एक दूसरेको दिलासा दे रहे थे उसी समय एक तिसरी व्यक्ति आ पहूँची यह युवान व्यक्ति खूब ठाठ माठसे श्रृंगार सज कर अपने असली रूप रंगको और भी सुशोभित कर रही थी। बातें

ही जयश्रीकी परवा कुछ भी न कर एकदम कयवन्नाने जा भेटी। और कहने लगी " ओ मेरे प्यारे प्राणनाथ। मैं मेरे जीवनमें तुमको छोड़नेवाली नहीं हूं। मेरी स्वार्थी माताने तुमको मेरे हृदयरूपी गृहमेंसे पृथक् नहीं किया। मेरा मन आपसे पृथक् नहीं है और आपके शरीररूपी गृहमें सदा वास करनेका ही निश्चय किया है उस हालतमें आपकी संगत किस प्रकार छूट सकती हैं। अब तो मैं वैश्याके भ्रष्ट घरमें एक पलभर भी नहीं ठहर सकती। अब तो मैं आप ही के पवित्र घरमें मेरी सुशीला बहिन जयश्रीके आश्रयके नीचे सदा आनन्दसे रहूंगी और आपको भी आनन्द दूँगी। मेरे पहिननेको जो अमूल्य भूषण है वे सर्व आप ही के हैं। उनको आप सहर्ष स्वीकार करे और उनको बेचकर व्यापार कर अपना जीवन निर्वाह करे। और पूर्वकी स्थिति पुनः प्राप्त करनेका परीश्रम करे। इस प्रकार देवदत्ताने बात करती हुई अपने सर्व आभूषण उतार कर कयवन्नाके आगे रख दिया। सत्य प्रेम इसीका नाम है। जब तक हमारी समग्र भारतीय महिलाओके मनमें इस तरह पवित्र प्रेम उत्पन्न होनेका संस्कार न हो तबतक भारत का पवित्र देश अन्य प्रदेशोसे उन्नतिमें आगे न बढ़ सकेगा।

जब जयश्रीने यह हालत देखी तो आनन्दयुक्त आश्चर्यमें हुई और देवदत्ताकी तरफ प्रेमभाव उत्पन्न हुआ और जिससे आकर्षित होकर एक दुसरेसे भेट पडी। इन दोनों पति वत्सलाओके प्रेमको देख कयवन्ना आनन्दमें फूला नहीं समाता था। वह भी

दोनोको एक ही मूर्तीरुप गिनकर उनको स्नेहकी नजरसे देखता रहा। त्रिपुटी कितने ही दिनों तक आनन्द विताते रहे।

—※※※—
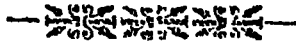
प्रकरण ८

हमारे चरित्र नायक कयवन्नाने देवदत्ताके दिये हुए आभूषणोंको वेचकर उससे जो द्रव्य मिला उसमेंसे आधा तो अपनी दोनों पत्नीओके निर्वाहके अर्थ उनको सौपां और आधा व्यापारके लिये अपने पास रखा। अब व्यापार करनेको देशान्तर जानेका पूर्ण विचार किया। अल्प समयमे एक जाहज व्यापार मंडलका देशान्तर जानेवाला था उसी जाहजमें कयवन्नाने जानेका विचार किया। और अपने घरकी व्यवस्था करने लगा और अपनी दोनो पत्नीओको उपदेश दिया कि मेरा वियोग बड़ी हिम्मतसे सहनशिलताके साथ सहन करना। जिस प्रातःकालको जाहज रवाना होनेवाला था उस रात्रीको जहाजके पास जाकर सोनेका विचार कयवन्नाने किया क्योंकि उसको यह भय था कि मुझे निंद आ जावे और जहाज चल देवे और मेरी सर्व आशाएं निष्फल जावे। अतएव सांयकालको अपनी दोनों स्त्रियोंसे विदा मांगी तब जयश्रीने शुभ शुकन दिये और विवेकके साथ हाथ जोडकर निवेदन करने लगी "प्राणनाथ आप सिधारो"। यद्यपि एसा शब्द मुझको उच्चारण करते हुए जिव्हा रुकती है तथापि शुभ कार्यमें अश्रुका बहाना सतिओंके लिये अनुचित है। आप

आनन्दसे पधारे और मन इच्छित कार्यकी सिद्धि प्राप्ती करे। पर्यटनमें सावधान रहे। स्वास्थनकी रक्षा करे। वीर प्रभूको सर्वदा स्मरणमे रखे। व्यापार आदि कार्यमे मनको स्थिर रखे। हमारा और घरका विचार बार २ न करे। हमारे दुःखको याद कर दुःखी न होवे। अपने कुशल क्षेमका पत्र देते रहे और इन दासिओको याद रखें। अपनी इच्छाको शीघ्र पूर्ण कर वापस दर्शन शीघ्र २ दें। देवदत्ताने भी प्रार्थना की "कल्याण हो साथ आपका इच्छितार्थ फलिभूत हो और वापस कुशल आगमन शीघ्र हो सरस्वती और लक्ष्मीकी जोडीका आशीवार्द सुनकर कयवन्ना आनन्दमें गरकाव हो गया। वाकईमें समय ऐसा ही था। अन्तमें कयवन्ना दोनोको धैर्य देकर अन्तिम यादगार चिन्ह देकर घरसे विदा हुआ। नगरके बाहर निकलकर एक निकट देवालयमें रात्रि विश्राम करनेके अर्थ प्रवेश किया। वहां पर एक टूटी फूटि खटिया और फटा टूटा बिस्तर मिला जिसको बिछाकर सो गया। रातभर स्त्री वियोग, घरका पूर्विय ठाठमाठ और व्यापार आदिके स्वप्न आते रहे। अभी तो आधिरात गुजरी होगी चारो तरफ अंधकार फैल गया इस समय चोर लोग अपनी कमाईके येहमें निकलनेको जाग रहे है। सर्व संसार निद्रादेवीकी गौदमें सो रहा है। सिवाय श्वासोश्वासकी आवाजके और कुछ भी सुनाइ नही देता है। ऐसे शांतिमय समयमें अचानक प्रकाश माल्हम पडा साथ हीं पांच व्यक्ति नगरसे बाहिर देवालयकी तरफ आती हुई नजर आई। उनको बारिकीसे देखनेसे पांचोंही स्त्रिएं माल्हम ई जिसमें चार तो नवयुवती जो लावण्यमय माल्हम होती थी।

और एक बुढ़िया थी जिसकी शकल देखनेसे डर मालूम होता था। चारों नवयुवतिएं इनके रूप, रंग, वस्त्र, आभूषण और चाल ढालसे खानदानी मालूम होती थी। देवालयके पास आते ही बुढ़ियाने अन्दर प्रवेश किया और उनके पीछे २ चारोंभी अन्दर गई। जाकर चारों तरफ नजर दौडाई तो एक तरफ एक मुसाफिर सोता हुआ पाया। उसके निकट जाकर देखा। देखतेही आनन्द ही फूली न समाई क्योंकि इससे शायद उसका कोई मतलब हल होता हो। उसने हाथ आगे बढ़ाकर प्रकाश युवतीके हाथमेंसे लेकर उसके चहरेकी तरफ देखा तो वह पुरुष तेजस्वी मालूम हुआ। गौर अंग और सुन्दर चेहरा उसके खानदानके उच्च होनेकी साक्षी दे रहा था। फिर बुढ़िया मनमेंहीं विचार करने लगी "अहो नसीब नसीब तूने आज मेरी लाज रखी, मेरा एकका एक पुत्र आज ही सायंकालको सांपके काटनेसे कालके ग्रास हो गया जिससे मैं बिल्कुल निरवंश हो गई। अब मेरा धन लावारिस समझ कलही प्रातःकालमें राजा लूट लेगा, और क्रोड़ोकी पुंजी, ज्वाहिरात और भवन इन सबका मालिक राजा होगा। परन्तु परमात्मा जिसकी रक्षा करे उसको कौन मार सकता है। अभीतक तो विधाता मेरे पर राजी है नहीं तो अभी तलाश करते एक घंटा भी नहीं हुआ कि इतनेमें ऐसा रत्न मेरे हाथ आया।" उपरोक्त बात विचार कर उस बुढ़ियाने प्रकाशको उन युवतीओंकी तरफ डाला जो कुछ दूर खडी थी अपने हाथसे चपटी बजाकर उनको इशारा किया। इस संकेतको चारो युवतीए समझ गई और शीघ्रही बुढ़ियाके पास आई।

बुढ़िया-घुर्राने लगी कि क्या देखती हो। खटियाके चारों पायोंको चारो जनी उठाओ और घर ले चलो। इतना सुनते ही डरके मारे चारों युवतिओने आज्ञा पालन की। थोड़ीही देरमें उन युवतिओंने एक दिव्य मकानमें खटिया सह प्रवेश किया और एक विशाल (भव्य) दिवानखानेमें तुटी फूटी खटीयाकों धीरे २ रखकर श्रम लेनेके अर्थ बेठ गई। उन कोमलांगनाओंने इतना परिश्रम पहिले कदापि भी नही किया था। इस कारण इतना बोझा इतनी दूरसे उठाकर लानेमें उन अबलाओंके ओढ-नेकी चादर तक पसिनेसे लबालब होगई। और वस्त्र बारिक होनेसे भीगकर अन्दरके ढके हुए ललितांग बारिकीसे देखने वालोंकी नजरमें आते थे। रास्तेमें कोई पकड न ले इस भयसे बहुत तेज चाल चलते हुए वस्त्र इधर उधर हो गये थे। मगर उस समय उन युवतिओंकी शोभामें विशेषता होती थी मगर उस रमणिय शोभाको उस समय सिवाय तारोंके और कौन देखता था? उस टूटी फूटी खटियांपर सोया हुआ पुरुष और कोई नही परन्तु कयवन्ना ही था।

अब कयवन्ना जब जागा तो वह क्या देखता है कि ऐसे सुन्दर भवनमें उसी खटियापर बैठा है और उसके पास चारों नवयुवतिओको बेठी पाकर और भी आश्चर्य हुआ और विचार करने लगाकि क्या मैं स्वप्नमें हूं? या जाग्रत अवस्थामें हूं। मेरे चार स्त्रिएं कब थी? संसारमें दोही स्त्रिओने मुझे पति स्वी कारा है। और ऐसे सुन्दर महलमें कब रहता था? यह विचार कर रहा था कि इतनेमें कपडे बदलने गई हुई बुढ़ियां लौटकर

वहां आई और एक धूर्त स्त्रीकी भांति युक्ति और हिम्मतसे कहने लगी–

" बेटा! आज तेरेको क्या हुआ है? तू सर्वदा प्रातःकाल ही उठता था और सामायक करनेके लिये पोषधशाला जाता था बाद मंदिरमें पूजन करनेके लिये जाता था तत्पश्चात् घरबार नोकर चाकर व्यापारादिकी संभाल कर बादमें रात्रीके विश्रान्तीमें चारों स्त्रियोंसे विनोद करता था। मगर आज तू अभीसे स्त्रि-ओंको लेकर बैठा है। यह देख मुझे आश्चर्य होता है। कि क्या कालकी गति तो नहीं बदलती? धर्मकी गिरती दशाका यह चिन्ह तो नहीं है?

खटियाके पास चारो स्त्री जो बुढ़ियाकी पुत्रवधू थी वे अपनी सासकी साहस और धुर्तताको देख आश्चर्यमें गरक हो गई। उस विकाल बुढ़ियाका उन पुत्र वधूओपर इतना दबाव था कि उसकी मरजीके विरुद्ध कुछ नहीं कर सकती थी। वह बुढ़िया मनुष्य थी परन्तु एक राक्षणीके समान थी। उसका शरीर और चेहरा भयंकर था और उसमें उसकी अद्भुत पोषाक और भी डरावनी सुरत बना देती थी। स्त्रिएं उस आज्ञा माफक चले उसमें कोई नविनताई नहीं थी क्योंकि पुरुष भीउसकी आज्ञा विरुद्ध करनेका साहस नहीं रखते थे। चारों स्त्रीओ उस बुढ़ियाके अन्तिम वाक्य सुनकर एकदम वहांसे उठी और मकानके दूसरे हिस्सेमें जाकर विचार करने लगी कि अब क्या करना?

प्रथमा–बहिन! सास क्या करना चाहती है? उसका हाल मालूम न होनेसे हम इसकी आज्ञानुसार इस पुरुषको उठाकर

यहां लाई है। अपन सबका यह विश्वास था कि सास इस पुरुषको घरमें नोकरकी भांती रखेगी। परन्तु वह तो हमारा पति बनाना चाहती है।

दूसरी—बहिन अब अपन क्या कर सकती है? बूढ़ियाके आगे क्या किसीकी चली है? यदि उसके विचारके विरुद्ध चले तो अपने ही को मार डालेगी।

तीसरी—अरी! मार डालेगी तो क्या होगा। एक बार मरना ही है।

चौथी—कहना ही चाहती थी कि इतनेमें समय सूचक बूढ़िया उनकी सभामें आ खड़ी हुई। उसको किसकी तरफसे आमंत्रणकी आवश्यक्ता थी? बुढ़िया गुर्राई और क्रोध पूर्वक कहने लगी कि अरी क्या करनी है? क्या धंधा पकड़ा है? खबरदार! जरा भी मेरी आज्ञाके विरूद्ध हुई तो तुम्हारे प्राण गये समझो। चाहे तुम कैसी ही क्यों न हो परन्तु तुम्हे अभी अनुभव नहीं है। तुमको संसारकी कुछ सुध नहीं। तुम्हारे पतिका देहान्त हो गया है जिससे राजा कल प्रातःकाल ही सर्व धनको अपने अधिकारमें कर लेगा और तुम्हारा बुरा हाल होगा और सम्भव है कि तुम्हारे रूप पर मोहित होकर तुमको दुःख दे। अतएव सर्व दुःखोसे बचनेके अर्थ यही मार्ग उचित है कि तुम इस पुरुषको अपना पति स्वीकारो। यह कोइ और है एसा इसको भ्रम तक न होने पावे। मैंने उसको दृढ़ कर रखा है कि यह मेरा ही पुत्र है बिमारीसे चित्त भ्रमित हो गया है जिससे

एसा व्हेम रखता है कि मैं जागता हूं कि सोया हूं कि स्वप्न देखता हूं। परन्तु अब इसको चित्त भ्रमकी औषधीके बहानेसे पौष्टिक पदार्थ खिलाऊंगी जिससे इसका विकार जायगा और नित्य तुम्हारा सहवास होनेसे पिछली सब बातें भूल जावेगा। और यह घर मेरा ही है एसा मानने लग जायेगा। मैं इस घरके सिवाय और किसो दूसरे घरमें या कुटुम्बमें था यह सब उसको स्वप्नवत् मालूम होगा। चारों स्त्रीएं बुढ़ियाके संपूर्ण आधिन होनेसे उसकी आज्ञानुसार उसी पुरुषके पास रहने लगी। सर्वदा स्त्रियोंके सहवास रहनेसे धीरे २ बोलनेकी स्वतंत्रा बढ़ती गई और अल्पकालमें ही सब पति पत्निकी भांती रहने लगे। आहा भवितव्यता तैरी गति अलौकिक है। पाठक! जमाना जमानेका काम करता रहता है। इधर तो कृष्ण गोपीकी भांति बना हुआ कयवन्ना चारों स्त्रीएं एश आराम उडा रहे है। महिने वर्ष दो वर्ष करते २ बारा वर्ष बित गए परन्तु कयवन्नाको कुछ भी मालूम नहीं हुआ। चारों स्त्रीओंके चार पुत्र हुए। कयवन्ना स्त्री, पुत्र और धनके सुखमें आनन्दमें रहने लगा परन्तु यह उसकी दूसरी निद्रा थी। पहिली निद्रामें देवदत्ताके घर बारा वर्ष बिताए और दूसरी निद्रामें बुढ़ियाके घरमें चारों स्त्रिओंके साथ बिताए। जब कयवन्नाके चारों पुत्र बड़े हो गए और पढ़ने लिखने लगे तब राक्षसणी बुढ़ियाने बिचारा कि अब सब बहुएं पुत्रवाली हो गई हैं जिससे अब राजा घर धन धान्य अपने अधिकारमें न कर सकेगा। अतएव अब इसको (कयवन्नाको) घरसे निकाल देना चाहिये। एसा बिचार कर बुढियाने चारों बहुओंको बुलाकर

आज्ञा दी कि आज रात्रिको हमें इस पुरुषको वही छोड़ आना उचित है जहांसे १२ वर्षके पूर्व इसे उठा कर यहां लाई थी। इन कटुवा क्योंको सुनकर एक बहूने कहा। माताजी। माताजी! अपने घरकी रक्षा करनेवाले, वंशकी वृद्धि करनेवाले, लक्ष्मीको रखनेवाले श्रेष्ठ पुरुषको अपनी गरजसे यहां लाई फिर एसे रत्न पुरुषको अन्तमें धोका देना हमारेसे नहीं होगा। जिसके साथ बारां २ साल अमन चैनमें व्यतित किये। क्या वे स्त्रिए अपने स्वीकार किए हुए पतिको धोका दे सकती है? नहीं? कदापि नहा?

यह वचन सुनते ही विकाल ज्वालामईने अपना अद्भुत दर्शन कराया और कहा कि क्या तुम अपनो सासकी भी सास बनना चाहती हो? जितने वर्ष मेरेको हुए हैं उतने तुमको हो जाए तब अपनी युक्ति लड़ाना। क्या तुम्हारेको कोई चिन्ता है? यह तुम्हारा बाप विशेष समय तक यहां रहेगा तो घरका मालिक हो जायेगा। बस थोड़े ही में कहती हूँ कि इसको जहांसे लाई वहां पहूंचानेको तैयार हो जाओ। इतना कहना ही था कि मजाल है कोई प्रति उत्तरकर सके। बस हो चुका मानों मक्खी तेलमें डूबी। क्योंकि उस विकाल ज्वालामईके आगे किसीकी भी नहीं चली और अन्तमें उसकी आज्ञानुसार तैयार होना पड़ा। रात्रि देवीका आगमन हो चुका था उसकी स्याह-चदर चारों तरफ फैला दी थी और शांतीमें समयके अनन्तर उस बुढ़ियाने सम्भाल कर रखी हुई वही टूटी फूटि खटोली और उस पर रखा हुआ वही गुदड़ा बिच्छाया और कयवन्नाको उस

पर सुलाया गया जो कि निद्रादेवीके पूर्ण अधिकारमें था। बाद उसी खटियोंको उसकी आज्ञानुसार चारों स्त्रीओने उठाकर जहांसे प्रथम लाई थी वहां ही रख कर वापस घर आगई। उस समय चारों स्त्रिएं आपसमें विचार करने लगी अहो बहिनो कर्मकी विचित्र गती है। इस राक्षसणी सासके दबावमें आकर अपने शियल रूपी अमूल्य रत्नका चूरे चूरा करादिया। और उसके बदलेमें मिला हुआ। विषय भोग आदि सुख भी लूट लिया गया। बस क्या किआ जाय हम भी इन दुखिनिओंके दुःखके लिये केवल दो लंबी शांस छोड़कर आगे चलेंगे और उस सत्य हृदयवाले कयवन्नाकी सुध लेंगे। क्योंकि इस दुखी जगतमें किसके दुखको रोना और किसके दुखको भूलना। रात्रि पूर्ण होने आई सूर्योदयका आगमन सुनकर टगमगाते तारोने अपने आपको छिपा लिया और कुछ भागने लगे। सूर्य स्वप्न अवस्थामें पड़ी हुई दुनियाको अपनी किर्ण रूपी अंकुशसे जाग्रत कर रहा है। बल कि कई वर्षोंसे स्वप्नमें पड़े हुए कयवन्ताको भी जगाया और साथमें देवालयमें लटके हुए घंटेकी नादने चौकन्ना कर दिया। भक्तजन मन्दिरमें आ आकर बार २ टन टनकी आवाज कर रहे थे कि जिसमें कई वर्षोंसे स्वप्नमें सोया हुआ कयवन्ना पूर्ण तौरसे जाग्रत होकर उठ खड़ा होवे। अरे! घंटनाद जरा सबर कर क्योंकि तेरी टन टनकी तेज आवाज कयवन्नाको जाग्रत कर दुखी करेगा। दयाला और निर्दयमत हो।

अन्तमें घंटानादके आवाजसे कयवन्ना जाग उठा और

देखता है तो उसी राजग्रही नगरीके बाहर वही मन्दिर और वही टुटि फुटि खुटिया नजर आती है। अब विचार करने लगा कि यह कैसा स्वप्न। समुद्रयात्रा करनेके अर्थ निकला हुआ मैं एक सामान्य श्रेणिका पुरुष हूं। या चारो स्त्रिओंका पति तथा चारों पुत्रोका पिता हूं यह स्वप्न है नहीं यह स्वप्न परन्तु नहीं सत्य है। बाकी देशान्तरमें जानेके लिये सज्ज होकर मंदिरमें सोया हुआ मैं रंक हुं यह स्वप्नमय मायाने कयवन्नको भूला दिया, उलझा दिया और घबराने लगा। बड़े ऊंचे स्वरसे रोने लगा। हाहाकार मचाने लगा। रोनेकी आवाज सुनकर देवालयका पूजारी दौड़कर वहां आया और इस तमाशेको देखकर हंसने लगा। परन्तु जब उसने उसको बारिकीसे देखा तो कयवन्नाको पहिचान गया। चित्त भ्रम हो गया है एसा समझकर उसके घर पहुंचानेको गया। जब पूजारी कयवन्नाको उसके घरके पास छोडकर चला गया तब वह घरमें प्रवेश करने लगा। घरमें प्रवेश करते ही एक बारा वर्षके बालकने उसे देख कर अपनी मातासे पुत्रको कहा कि कोई मेहमान आता है। यह सुन कर जयश्री और देवदत्ता दोनों अन्दरके कमरेसे बाहर आई ज्यांही आते हुए पुरुष पर दृष्टी पडी त्योही पहिचान लिया परन्तु उसे देख कर दोनोंही अति हर्षसे पागलसी हो गई। और अपने पुत्रको कहने लगी कि यह मेहमान नही परन्तु तेरे पिता है। यहां पर यह कहना भी अनुचित न होगा कि जिस मायाने कयवन्नाको दोवार बाराह २ वर्ष अपनी मायके जालमें उसके सत्य स्वरूपको भुला

दिया था उसी प्रकार लेखकको भी मायामे यह कहना भूला दिया कि जिस समय कयवन्ना परदेसकी यात्राके लिये घरसे निकला था उस समय जयश्री गर्भ धारण किए हुए थी जिसमें उसके यह बाराह वर्षका पुत्र घरमें देखते है पाठकोंको इस बातकी खबर न थी इसलिये कयवन्नाके पुत्र कहांसे हुआ इसकी शंका करनेकी आवश्यक्ता न पडे। उसके साथ मायाके चमत्कारमें लेखक एक बात कहना और भी भूल गये कि जिस समय बुढ़ियाने उन चारो स्त्रीओंका जब न माना तो अन्तमे उन्होंने एक बात स्वीकार करनेको बुढियासे कहा और वह यह थी कि इसके साथ हम बहुत आनन्दके साथ रही अतएव भोजनके अर्थ एक २ लड्डू इसके पास रखने दे। यह शरत बुढ़ियाने मंजूर कर दी उस पर चारो ही स्त्रिओने एक २ लड्डू तैयार किया जिसमे एक २ अमूल्यरत्न डाल दिया था। चारों ही लड्डूको कयवन्नाके पास खटीया पर रख दीये जिसको कयवन्ना जब मन्दिरसे घर आयां तब लेकर आया था। जब कयवन्ना अपना सब हाल अपनी अर्धांगनिओंको कह रहा था। इस बीचमें उसके पुत्रने पाठशाळा जानेका समय होनेसे दो पहरी नास्तेके लिये कुछ मांगा। तब जयश्रीने उन चार लड्डूओंमेंसे एक लड्डू उसको देकर खाना किया। जब दूपेहरको एक घंटेकी छूट्टी हुई तब विद्यार्थी इधर उधर खेल कूद और खाने पीनेमें लगे। कयवन्ना पुत्र भी अपना लड्डू लेकर खानेके लिये बैठा। जब लड्डू तोडा तो उसमेसे एक चमकता हुआ पथर गिरा। जिसके गिरते ही एक हलवाईके

लडकेने काचका खिलोना समझ कर उठा कर घरका रास्ता नापा। तिसपर कयवन्ना पुत्र भी पिछेका पिछे दौड़ता हुआ गया। हलवाईने दोनोको हांफते हुए घरमें आते देख कर पूछा कि क्या है! तब हलवाईके लडकेने हाथमेका खिलोना दिखाया जिसको देखते ही हलवाईने पहिचान लिया कि यह तो किमती रत्न है तो वह लेकर दोनोंको थोड़ी २ मिठाई देकर विदा किऐ। इधर घर पर जब कयवन्ना अपनी दोनो स्त्रिओं सहित भोजन पर बेठा तब उन तीनों लड्डूओको तोड कर खाने लगे तब उन तीनोमेंसे भी एक २ रत्न निकला जिसको देख कर कयवन्ना और उसकी स्त्रीएं तीनो आनन्दमें गर्क हुए। उन रत्नोको वेचकर कयवन्नाने बड़ा भारी व्यापार करना शरू किया। और विधाता सुलटा होनेसे दिनोदिन व्यापारमे लाभ होता रहा और अल्पकालमें ही अपनी पूर्वकी स्थिति पर पहूंच गया इतना ही नहीपरन्तु अब तो नगर भरमे कयवन्ना प्रख्यात हो गया। वह भी आनन्द पूर्वक अपना समय बिताने लगा।

प्रकरण ५ वां।

एक दिन श्रेणिक राजाका सेचाणक हाथी पानी पीनेको तालाब पर गया था वहां पर मगर मच्छने हाथीका पाउं पकड लिया। यह हाथी राजाको बहुत प्रिय था। इस लिये उसको बचानेके लिये नगरमें ढंढोरा पीटवाया गया कि जो मनुष्य हाथीको बचावेंगा उसको राजकुंवरी व्याही जावेगी, और आधा धन मिलेगा। इसपर हजारों आदमियोने प्रयत्न किया परन्तु सब निष्फल हुआ। इस पर हलवाइ उस रत्नको लेकर तलावपर आया और लेकर पाणीमें जहां हाथी खडा था वहाँ फेका फेकते ही पानीके दो भाग हो गए। पाणी अलग होनेसे वहां जमीन खुल्ली हो गई इससे मगर मच्छ हाथीका पाऊं छोडकर पानीमें चला गया इससे हाथी बच गया।

इसपर राजा और उसका बुद्धिशाली मंत्री अभयकुमार विचार करने लगे। कि हलवाई जैसे सामान्य मनुष्यके पास एसा अमूल्य रत्न यहांसे आया इसपर तलाश करते मालूम हुआ कि इसका असली मालिक कयवन्ना शेठ है। इसपर ढंढोरेके अनुसार राजकन्या कयवन्नाको व्याही गई और आधा धन दिया गया। अब कयवन्नाको किसी बातकी कमी न रही अब वह अपनी पूर्वकी दोनो स्त्रिएं तथा राजकन्याके साथ आनन्द मय समय व्यतित करता था। इसके पश्चात् कयवन्ना और अभय कुमार मंत्रीकी गाढ मित्रता हो गई।

एक दिन कयवन्नाको अपनी चारो स्त्रियों और चारो पुत्रोका स्मर्ण

हो आया । और उसने यह बात अभयकुमारको कही कि इनका पत्ता लगानेकी कृपा करे। अभय कुमारने इस बातका पता लगाना स्विकार किया। क्योंकि अभय कुमारको कोइ भी कठीनसे कठीन कार्य करनेको क्यों नही सोंपा जावे तो भी वह अपनी एसी युक्तिसे काम करता कि वह उसमें साफल्यता प्राप्त करता और इसी कारण अभीतक व्यापारी लोग अपने व्यापारके नविन चोपडेमें दिवालीके "दिन अभय कुमारकी जैसी बुद्धि हो" एसी प्रार्थना करते हैं ।

अभयकुमारने कयवन्नाके मकानकी सुफेदी करवा कर उसपर रंगविरंगी वेलबूटे चित्रकारीसे सुशोभित कराया और मकानके अन्दर सामनेकी दिवारके पास कयवन्नाकी एक मूर्ती एसी बनवाई गईकि जिसमें किसीको यह न मालूम हो, कि यह मूर्ति है मानो साक्षात बैठा है। बादमें डुंडी नगर भरमें पिटवाई कि चौमुखी महावीर आज चमत्कार बतलावेगे । अत एव सर्व प्रजाको आज्ञा दी जाती है कि आज सायंकालको सर्व प्रजा छोटे बडे मनुष्यमात्रको दर्शनके अर्थ आना आवश्यकीय है।

डुंडीके पीटनेसे नगर निवासी दर्शन करनेके उत्साहसे सांयकालको सुन्दर वस्त्रोसे सुशोभित हो २ कर उपरोक्त स्थान पर शीघ्रतया पहूंचनेके अर्थ घरोसे रवाना हो कर आने लगे। भला देवकी कृपा किसको न चाहिये। जब्रजंग महावीरके भयसे और राजाकी आज्ञा होनेसे बालकसे वृद्ध तक सर्व आने लगे। अभय कुमार मंत्री और शेठ कयवन्ना पहिलेसे ही आ गये थे। और जितने दर्शक आते थे सब पर नजर पडती

थी । इतनेमें वही बुढिया चारो स्त्रियो तथा चारों पुत्रो सहित जो अपनी २ माताओकी अंगुलीयोको पकडे हुए थे मंदिरमे प्रवेश किया जिनको देखकर कयवन्ना पहिचान गया परन्तु चुप हो रहा। मूर्तिको देखते ही चारो स्त्रियोके हसमुख चेहरे उदास हो गए और चारों बालक मूर्तीको देखकर जा लिपटे एक पुत्र तो पिता २ कह कर कपडें खिंचने लगा। दूसरेने कहा कि तुम तो मेरेको घड़ी भर भी अपनी गोदसे न छोडते थे इतने दिनोसे कहां गये थे। तीसरेने कहा कि दादी मुझे प्रतिदिन धमकाती है तुम क्यों नहीं रोकते ? चौथेने कहा कि तुम मेरे विना भोजन नहीं करते थे अब अकेले जीमना किस प्रकार अच्छा लगता है। इस प्रकार चारों बाल उस मूर्तीको पकड कर उठाने लगे कि पिताजी चलो घर चले। तुमको यहां न बैठने दूंगा। इस प्रकारके कौतुहल था सर्व आश्चर्य पूर्वक देखने लगे। इसपर अभयकुमार मंत्रीने जान लिया कि यही चारो स्त्रिए तथा पुत्र कयवन्नाके हैं। इस पर उसने उन स्त्रियो बालकों और बूढ़ीयाको एक पडदेवाली कोटडीमें भेज दिये और बादमें सबको राजमहलमे पहूँचाये गये। जहां पर बूढियाको अभयकुमारने धमकाया कि सत्य २ हकीकत कह कि यह क्या बात है तब बुढ़ियाने देखा कि अब सत्य कहे विना ठिकाणा नही तब सब हाल सत्य २ कह दिया। उसपर अभयकुमारने चारो स्त्रियों तथा चारों बालकोंको कयवन्नाके स्वाधीन किये। बुढियाका गुनाह कयवन्नाकी सिफारिशसे माफ किया गया। बुढ़ियाकी सब सम्पती अभयकुमार कयवन्नाको सोंपने लगे परन्तु उसको धनकी कहां कमी थी जो लेने

को स्वीकारता । उसका धन उसीको सोंपनेको कयवन्नाने सिफारश की। बस बुढ़ियाको और क्या चाहिये था ? अपनी सम्पती बचानेको कयवन्नाको लाई थी उसको तो घरसे निकालही दिया था और अब बच्चे और उनकी माताएके जानेसे विशेष खुशी हुई। कयवन्ना स्त्रि बाळकों तथा बुढ़ियाका मन इच्छित कार्य सिद्ध हो गया ।

प्रकरण ६

एक वार श्री महावीर प्रभु पृथ्वी तलको पवित्र करते हुए और अनेक भव्य जीवोंको धर्मोपदेश देते हुए संसार समुद्रसे पार करते हुए राजग्रही नगरीमे समवसरे। देवताओने समवसरणकी रचनाकी । श्री महावीर प्रभुको वंदन करनेके अर्थ राजाश्रेणिक मंत्री अभयकुमार और शेठ कयवन्ना शाह सामन्त आदि बड़े २ नगरीक समारोहके साथ आये। राजा श्रेणिक प्रभुकी त्रीप्रदक्षिणा देकर बंदना करके यथायोग्य स्थान पर प्रभुकी अमृतधाराको पान करनेके अर्थ बैठा। करूणा सागर प्रभुने इन्द्रि दमनके विषयमें उपदेश दिया, कई भव्य जीवोने यथाशक्ति नियमादि लिये। प्रभुका उपदेश पूर्ण होनेबाद कयवन्ना शाहने अपने मनकी शंका पूछी "हे त्रिलोक्यनाथ ! भव भंजन भगवान ! मैंने इस भवमें तो कुछ सुकृत किया ही नहीं तो भी मेरी सब ईच्छाएं फलीभूत होती रही । इसका कारण क्या ?

त्रीकालज्ञानी प्रभुने पूर्व भवका कुल वृतान्त भव्यजीवोंके उपकारार्थ कहा कि हे महाभाग यह सब सुपात्र दानका फल है। पूर्व जन्ममे तू शालीग्राम नगरमें गोवालीयाका पुत्र था। तेरे पिताके काल होनेपर तेरी माता बहुत दुखीत स्थितिमें आपडी।

एक दिन कीसी पर्वके दिन किसीके घरमें कीसीको खीर खाते देख तेरेको भी खीर खानेकी इच्छा हुई परन्तु माताके पास कोइ सामग्री न होनेसे तू रोने लगा। तेरेको रोता सुन पडोसीओंने तेरी मातासे तेरे रोनेका कारण पूछा। माताने सब बात कह दी, उनको इस पर दया आई किसीने चावल, किसीने खांड आदि सर्व वस्तु पृथक २ व्यक्तियोंने लाकर दी जिसको लेकर तेरी माताने खीर तैयारकी। बाद खीरको थालीमे पिरोसकर तेरी माताने तुझे खानेको देकर आप किसी आवश्यकीय कार्य करनेको बाहर गई। खीर विशेष गरम थी अतएव उसको ठंडी करनेके लिये तू बैठा रहा। इतनेमे एक मुनिराज आहारके लिये फिरते २ पुन्य योग्यसे तेरे घर पर पधारे महात्माने धर्मलाभ दिया। इस वचनको सुनकर तेरा रोम २ स्फुरायमान हो गया। उसी समय तेरा भाव अच्छा था तूने मुनिराजको खीर स्वीकारनेको कहा मुनिराजने आहारको शुद्ध प्रासुक जानकर पात्रको रखा। तेरे प्रणामकी धारा शुद्ध थी अतएव अपने आपको धन्य मानता हुआ तुने सारी खीर महात्माके पात्रमें डाल दी। और प्रणामकी धाराकी वृद्धि करता हुआ तूं थालीको चाटने लगा। इतनेमें तेरी माता आई। तेरेको थाली चाटते देख कहने लगी। अहो मेरा पुत्र कितना भूखा है? सारी खीर खाने पर भी थाली चाटता है।

तत् पश्चात् थोड़े ही कालमें दैव योगसे तेरी आयुष्य पूर्ण होगइ अतएवत् मृत्युको प्राप्त हुआ समयोचित सुपात्र दानसे तुझे इतनी रिद्धी मिली है। महानुभाव जिस दानको तूने प्रत्यक्ष अनुभव किया है। उसी दानकी आवश्यक्ता है। सबसे विशेष लाभ दाता यदि दान

है । तो वह ज्ञान दान करनेमें सब प्रकारसे सर्वदा तत्पर रहना उचित है ।

कयवन्ना शाह अपने पूर्व जन्मका वृतान्त जानकर और दानका महात्म सुनकर आश्चर्य चकित हुआ । इस सर्व बातोसे कयवन्नाको वैराग्यभाव पैदा हुआ जिससे चारित्र ग्रहण करनेका विचार कर हाथ जोड़ प्रभूसे प्रार्थना करने लगा कि मुझे दिक्षा दिजीये । श्री परमात्मा प्रभुने भी ज्ञानसे देखा कि यह दिक्षाको योग्य पात्र है तब प्रभुने उसके वचनोकी पुष्टि की ।

अब कयवन्ना प्रभुको वंदन कर अपनी स्त्रिओंकी आज्ञा लेनेको घर पर गया । वहां पर अपनी सर्व स्त्रिओंको एकत्र कर अपना पूर्व जन्मका वृतान्त कहा और संसारका स्वरूप दिखाया । बाद संसार त्यागकरनेकी अपनी उत्कृष्ट इच्छा दर्शाइ । स्त्रियांए भी संसारके स्वरूपको सुन और समझकर विचार करने लगी कि हम सब लौकिक व्यवहार सुखमें कयवन्ना शाहके साथ रही तो अब इनका साथ छोड़ना अनुचित है । परन्तु परलोकके सुखमें भी अपनेको हिस्सा लेना चाहिये । हमको भी प्राणपतिके साथ संसार त्याग करना चाहिये और जन्म मरणके दुःखोंको जड़मूलसे काटनेवाली शान्तिमय दीक्षाको ग्रहण करना चाहिये । स्त्रिओंने अपनी इच्छा अपने पतिसे कही ये सर्व एक मत होकर कयवन्ना मय अपनी सातों स्त्रिओंके प्रभु महावीरके पास शुभ दिक्षा ग्रहण करनेको गए । परमात्मा प्रभुने उन सबको दीक्षाके योग्य पात्र समझकर उनको बड़े समारोहके साथ दीक्षा दी और जिसको कयवन्ना और उसकी स्त्रिओने अच्छी तरह पालन किया । जिसको कयवन्नाने स्वीकार कीया और अपने लिये परभवका रास्ता साफ किया । अर्थात् मोक्ष सुखका संबंध जोड दिया ।

नियमावली ।

—※※※—
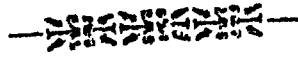
ज्ञान प्रसारक मंडल सिरोही (राजपूताना)

प्रकाशक—

वी० पी० सिंघई ।

सेक्रेटरी श्री ज्ञान प्रसारक मंडल—

सिरोही (राजपूताना)

(ऊंच कोटिकी शिक्षा प्राप्त ग्रेज्युटी द्वारा लिखित)

व्यवसाय पथ दर्शक।

(हुन्नर, कला, विज्ञान, और व्यापारके गूढ़ रहस्योंको
दर्शानेवाला हिन्दी भाषामें प्रथम मासिक पत्र)

आज कल सारे संसारमें व्यापारकी धूम चल रही है और दूसरे सर्व देशोने जो कुछ उन्नति की है। वह सब व्यवसाय द्वारा ही की है। प्रत्येक देशके व्यवसायी अपने २ व्यापारका गूढ़ रहस्य अपने देशकी समृद्धि बढ़ानेके अर्थ अपनी २ मातृभाषामें पुस्तको तथा दैनिक पत्रसे मासिक पत्र द्वारा अपनी अनुभवी बाते अपने देशकी भलाइ अर्थ प्रगट करते हैं। जब कि भारत वर्षमें हमारी इत्यादि सब बातें पिछडी हुई है यदि यह कहा जाय तो अनुचित नहीं होगा कि भारतीय बंधुओने व्यापारके गूढ़ रहस्योंसे अज्ञात रहनेमें ही बहादुरी समझ रखी है और जिसका कडवा फल गत महा विश्व व्यापी युद्धसे मिलचुका है। हम व्यवसायके आविष्कारोके गूढ़ रहस्योंसे अज्ञात हैं इसलिये हम परदेशके तैयार मालके लिये चीलकी भांति आकांक्षा करते रहते हैं। जब तक हम व्यवसायके गूढ़ रहस्योसे भली प्रकार सफलता वाकिफ नही होंगे तब तक हम किसी भी व्यापारमें भली प्रकार सफलता नहीं प्राप्त कर सकेगे। इसी उद्देशकी पूर्तीके अर्थ हमने हिन्दी भाषामें एक ऐसे ही मासिक पत्रको प्रकाशित करनेका संकल्प किया है जिससे हमारे देशका उद्धार हो। कमसे कम पांचसौ ग्राहक होने पर पत्र प्रकाशित किया जायगा।

वार्षिक मूल्य पोष्टेज सहित रु. २॥)   पत्र व्यवहार—

मैनेजर—हिन्दी साहित्य कार्यालय आबूरोड़।

नियमावली।

ज्ञान प्रसारक मण्डल सिरोही।

नोट—इस नियमावलीमें मण्डल शब्दसे ज्ञान प्रसारक मण्डलका बोध होगा।

क

(१) इस सभाका नाम, ज्ञान प्रसारक मण्डल होगा; और यह मण्डल जैन समाजसे तादन्तुक अवश्य रखेगा, किन्तु अपना कार्य प्रथक् रूपसे करेगा।

(२) मण्डलके उदेश हिन्दी भापामें नवीन और उपयोगी पुस्तकोंकी रचना कराकर, तथा अन्य भाषाओंकी उत्तम पूस्तकोंका अनुवाद कराकर, प्रकाशित करना होगा। और उनको स्वल्प मूल्यमे देना है।

(३) इस मण्डलके सभासद दो प्रकारके होंगे।

(अ) स्थायी सभासद (जीवन पर्यन्तके लिए)

(व) साधारण सभासद

(४) पेट्रन (रक्षक) वेही समझे जावेंगे जो इस मण्डलको एक मुस्त रु. ५००) देंगे। और फोटू मण्डलके होलमें लगाया जायगा।

(५) सहायक वे समझे जांयगे जो एक मुस्त मण्डलको रु. १००) देंगे और जिनकी सहायतासे जो पुस्तकें छपेंगी वे सभाके सहायक समझे जाएंगे। साहित्य शोधक, मुनिराज विना किसी तरहके पुरस्कारके भी पेट्रेन बनाए जाएंगे।

(६) स्थायी सभासद वे होंगे जो मण्डलके नियमोंके अनुसार भरती होकर १०) रु. चन्दा एकबार भरती होनेके समय देंगे ।

(७) साधारण सभासद वे होंगे जो मण्डलके साधारण सभासदीका चन्दा १) रु. वार्षिक देंगे ।

(८) साधारण सभासद बननेके लिए मंडलके स्थानीय मंत्रीको अथवा स्थानीय मंत्रीको, अथवा स्थानीय मंत्रीके अभावमें, मण्डलके प्रधान मंत्रीको, लिखना होगा, और इन मंत्रियोंको अधिकार होगा कि वे सभासद बनाकर चन्दा वसूल करें ।

(९) प्रत्येक व्यक्तिको साधारण सभासद बननेके लिए मण्डलकी साधारण सभासदीका फार्म भरना होगा । साधारणतः मण्डलके वर्षके आरम्भमें सभासद बनाये जावेंगे, परन्तु यदि कोई व्यक्ति सालके बीचमें सभासद होना चाहे तो वह उस सालके आरम्भसे सभासद समझा जायगा ।

(१०) प्रत्येक साधारण सभासदको सभासद होनेके समय अपना वार्षिक चन्दा आगामी देना होगा ।

(११) जो सभासद अपना चंदा ठीक समय पर नहीं देंगे वे सभासदीसे अलग समझे जांयगे, और उन्हे उस सालमें मण्डल द्वारा प्रकाशित होनेवाली पुस्तकें पुनः मेम्बर होने तक नही मिलेंगी ।

(१२) नियम नं. (११)के अनुसार जो व्यक्ति एकबार प्रथक् किया जा चुका है वह, यदि चाहेगा तो, पुनः नया फार्म भरनेपर

मण्डलका सभासद बन सकता है; किन्तु इस अवस्थामें उसे प्रवेशकी फीस देनी पड़ेगी।

(१३) प्रत्येक सभासदको मण्डल द्वारा तर्द्द प्रकाशितकी हुई पुस्तकें बिना मूल्य तथा बिना डाक-व्ययके मिलेंगी।

(ख)

(१४) मण्डलके कार्य कर्ता निम्न लिखित होंगे:—

(क) प्रधान मंत्री (यह प्रबन्धकारिणी कमेटीका भी मंत्री रहेगा।)

(ख) सहकारी मंत्री

(ग) उपमंत्री

(घ) कोषाध्यक्ष

(ङ) ऑडिटर

(१५) 'मण्डलके कार्य कर्ता मंडलमेंसे ही होंगे, और "सभाका सभासद हुए बिना कोई भी व्यक्ति 'मण्डलका कार्यकर्ता नहीं हो सकेगा।

(१६) कार्यकर्ताओंका चुनाव मण्डलके वार्षिकोत्सवके समय हुआ करेगा। यदि कोइ कार्यकर्ता वर्षके बीचमें अपना पद त्यागना चाहे तो मण्डलकी प्रबन्धकारिणी कमेटी उसके स्थानपर दूसरा नियुक्त कर सकती है।

(१७) मंत्रियोंके सत्व और कर्तव्य निम्नलिखित होंगे:—

(क) नियमोंके अनुसार प्रत्येक मनुष्यको सभासद बनाना तथा उसका चन्दा वसूल करना।

(ख) सभासदोंको प्रथक करना, तथा पुनः भरती करना ।

(ग) कार्य कर्ताओंके कार्यका निरीक्षण करना ।

(घ) मण्डलकी वार्षिक रिपोर्ट प्रकाशित करना ।

(ङ) वार्षिक अधिवेशनका प्रबन्ध करना ।

(च) प्रबन्ध कारिणी कमेटीका कार्य करना ।

(छ) स्थानीय मंत्री नियुक्त करना ।

(ज) मण्डलद्वारा स्वीकृत पुस्तकें प्रबन्ध कारिणी कमेटीके आदेशानुसार प्रकाशित करना, सभासदोंमें वितरण करना तथा विक्रय करना ।

(१८) कोषाध्यक्षका कर्तव्य होगा कि वह प्रधानमंत्रीके आदेशसे, बजटके अनुसार, कार्यकर्ताओंको वर्षारंभमें खर्च करनेके लिए द्रव्य प्रदान करे, तथा मंडलका हिसाब रक्खे !

(१९) ऑडिटरका कर्त्तव्य होगा कि वह कमसे कम छः मासमें एकबार मंडलके हिसाबकी जांच करे ।

(२०) स्थानीय मंत्रियोंका कर्तव्य होगा कि वे यथाशक्ति अपने अपने स्थानसे मंडलके लिए साधारण सभासद बनावें, तथा इन समासदोंसे समय समयपर चन्दा वसूल कर मंडलके प्रधानमंत्रीको भेजें और मंडलद्वारा प्रकाशित पुस्तकें प्रधान मंत्रीकी आज्ञानुसार स्थानीय सभासदोंमें वितरण करें ।

(ग)

(२१) मंडलके समस्त कार्यके प्रबन्ध तथा निरीक्षणके लिए एक प्रबन्धकारिणी कमेटी रहेगी ।

(२२) प्रबन्धकारिणी कमेटीके निम्नलिखित सभासद होंगे ।

(१) मंडलका महामंत्री ।

(२–४) मंडल, के मंत्री ।

(५) कोषाध्यक्ष

(६–१८) अन्य सभासद

(२३) प्रबन्ध–कारिणी–कमेटीका एक वार्षिक अधिवेशन वर्षके अन्तमें हुआ करेगा ।

(२४) साधारण कार्यके प्रबन्धके लिए प्रत्येक मासके प्रथम इतवारको प्रबन्ध कारिणी कमेटीका एक साधारण अधिवेशन भी हुआ करेगा ।

(२५) किसी आवश्यक प्रश्नके हल करनेके लिए प्रधान मन्त्री बिना अधिवेशन किये भी प्रबन्धकारिणी कमेटीके सभासदोंके साथ पत्र व्यवहार कर निश्चय कर सकता है ।

(२६) प्रबन्ध कारिणी कमेटीके अधिवेशनोंमें कोरम ५ उपस्थित सभासदोंका होगा ।

(२७) अधिवेशनके समय यदि मंत्रीयोंके अतिरिक्त कोई प्रबन्ध कारिणी कमेटीके सभासद उपस्थित न हो सके तो वह प्रबन्ध कारिणी कमेटीके किसी सदस्यको अपना प्रतिनिधि नियुक्त कर सकता है, अथवा लिखित राय पेश कर सकता है, और यह

लिखितराय, अथवा प्रतिनिधिकी राय, रायोंमें गिनी जायगी।

(२८) साधारण सभासदोंको मंडलके कार्यके विषयमें यदि संशोधनादि करना हो तो वे उसकी सूचना प्रधान मन्त्रीको दे सकते हैं, और यदि प्रधान मन्त्री उचित समझे तो उस सूचना विचारार्थ प्रबन्ध कारिणी–कमेटीके अधिवेशनमें पेश करे।

(२९) स्थायी सभासदोंका सम्बन्ध मंडलके प्रधान मन्त्रीके साथ होगा।

(३०) अधिवेशनके समय कमेटीको अधिकार होगा कि वह उस समयके लिए किसी सभासदको सभापति चुने और वह उस समयके लिए सभापतिका कार्य करेगा।

(३१) प्रबन्ध–कारिणी कमेटीके वार्षिक अधिवेशन पर निम्न लिखित कार्य हुआ करेंगे:—

(क) मंडलकी रिपोर्ट तथा वर्ष भरके आय व्ययका ब्यौरा पढ़ा जाना और उनका किया जाना।

(ख) प्रस्तावोंका पास होना।

(ग) आगामी वर्षके लिए बजट स्वीकार करना।

(घ) कार्याध्यक्षोंका तथा प्रबन्ध कारिणी कमेटीके सभासदोंका आगामी वर्षके लिए चुनाव।

(ङ) अन्य आवश्यक कार्य।

(३१) प्रबन्ध कारिणी कमेटीके प्रत्येक विषय पर निश्चय बहुमतसे हुआ करेगा।

(३३) प्रबन्ध कारिणी कमेटीके किसी सभासदकी जगह वर्षके बीचमें खाली होने पर कमेटीको अधिकार होगा कि उस जगहकी पूर्तिके लिए वह अन्य किसी सभासदको चुने।

(३४) प्रबन्ध कारिणी कमेटी यदि चाहे तो अपने वार्षिक तथा अन्य अधिवेशनोंके लिए स्वतंत्र नियम बना सकती है।

(३५) मण्डलमें प्रकाशित होनेके लिए पसंदकी हुई पुस्तकोंके लेखकोंको, यदि वे चाहेंगे तो, उचित पुरस्कार दिया जाया करेगा; और इस पुरस्कारका अन्तिम निश्चय मण्डलकी प्रन्बध कारिणी कमेटी द्वारा हुआ करेगा।

(३६) मंडलद्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित होनेवाली पुस्तकोंकी संख्या आदिके विषयमें निश्चय करनेका अधिकार मंडलकी प्रबन्धकारिणी कमेटीको होगा। किन्तु कमेटी किसी वर्ष प्रकाशित होनेवाली पुस्तकोंकी पृष्ठ संख्या १६ पेजी डबल क्राउनके ९००से कम निश्चय न करेगी।

(३७) पुस्तकें प्रकाशित होनेपर स्थानीय मंत्रियोंके पास भेज दी जाया करेंगी; और उनका कर्तव्य होगा कि वे उन्हें स्थानीय सभासदोंमें बांट दे।

(३८) मंडलके कोष तथा सम्पत्ति आदिकी व्यवस्थाके लिए मंडलकी प्रबंधकारिणी कमेटी स्वयं नियम बनावेगी।

(३९) मंडलकी स्थिति तक उसका कोष और सम्पत्ति मंडल ही की सम्पत्ति समझी जायगी। मामूली खर्चके लिए जितने द्रव्यकी आवश्यकता होगी उसे छोड़ बाकी किसी अच्छे

साहुकारमें जमा रहा करेगा मंडलकी स्थितितक मंडलके इस द्रव्यमें हस्तक्षेप करनेका समाजको कोई अधिकार न रहेगा ।

(४०) मंडलका वर्ष १ जनवरीसे ३१ दीसम्बर तकका होगा ।

(४१) मंडलका प्रधान कार्यालय सिरोहीमें रहेगा, किन्तु प्रवन्धकारिणी कमेटीको स्थान परिवर्त्तन करने तथा अन्य स्थानोंमें शाखा कार्यालय खोलनेका अधिकार रहेगा ।

(४२) सभासदोंके अतिरिक्त अन्य ग्राहकोंको पुस्तके अधिक मूल्य पर मिलेंगी ।

(४३) मंडलके नियमोंमें न्यूनाधिकता करनेका अधिकार मंडलकी प्रबन्धकारिणी कमेटीको होगा ।

(४४) मंडलद्वारा प्रकाशित किये जानेके लिए पुस्तके प्राप्त करने तथा लिखवाने आदिके लिए प्रधान मंत्रीको अधिकार होगा कि वह इस कार्यके लिए आवश्यक प्रयत्न करे किन्तु प्रबन्धकारिणी कमेटीकी अनुमति विना किसी भी पुस्तकके सम्बन्धमें किसी प्रकारका इकरार न कर सकेगा ।

(४५) प्रकाशित किये जानेके लिए जो पुस्तकें प्राप्त होंगी उन्हें प्रधान मंत्री मंडलके कोई भी दो सभासदोंके स्वीकार करनेपर प्रकाशित कर सकता है ।

नोट—मंडलके विषयमें सर्व प्रकारका पत्र व्यवहार श्रीयुत बी० पी० सिंघी सेक्रेटरी श्री ज्ञानप्रसारक मंडळ सिरोहीके पत्तेसे करें ।

श्राविका सुबोध द्वितिय भाग ।

(सचित्र)

मूल्य ०-१२-०

प्रकरण: अनुक्रमणिका ।

मिलनेका पत्ता:—मैनेजर—
श्री हिन्दी साहित्य कार्यालय,
आबूरोड ।

उपरोक्त पुस्तकका जो प्रथमसे ग्राहक होगा । उसका नाम पुस्तकमें प्रकट होगा । अतएव जिनको पहिलेसे ग्राहक होना हो पत्र द्वारा सूचित करे ।

प्रकाशकः—

बी० पी० सिंघी—आबूरोड़।

मुद्रकः—

ईश्वरलाल किसनदास कापड़िया 'जैनविजय' प्रिन्टिंग प्रेस,

खपाटिया चकला, लक्ष्मीनारायणवाड़ी सूरत।

प्राप्तिस्वीकार ।

निम्न लिखित पुस्तकें कुंवर मोतीलाल रांका ऑनरेरी प्रबंध कर्त्ता श्री जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय व्यावरसे प्राप्त हुई है ।

१	जैन शिक्षण पाठमाला	मूल्य	=)	पृ	६०
२	श्राविका धर्म दर्पण	,,	-॥	,,	४८
३	श्रावक धर्म दर्पण	,,	≡॥	,,	७४
४	शील रक्षा प्रथम भाग	,,	०)॥	,,	१६
५	,, ,, द्वितीयभाग	,,	=	,,	४०
६	हितोपदेश–रत्नावली	,,	=	,,	२८
७	श्री जम्बूगुण रत्नमाला	,,	=	,,	८४
८	वैराग्य शतक	,,	–	,,	२४
९	जैन धर्मके विषयमें सम्मतिया	,,	०)॥	,,	१६
१०	शालोपयोगी जैन प्रश्नोत्तर प्रथमभाग		≡॥	,,	६६
११	श्री जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय व्यावरका संक्षिप्त रिपोर्ट				

निम्न लिखित पुस्तके दोसी मणिलाल नथुभाई बी. ए. अमदावादसे प्राप्त हुई ।

१	ज्ञानदीपक	मूल्य	≡	पृष्ठ	६४
२	गुरु नानकनु जीवन चरित्र	,,	=	,,	३२
३	गुरु दर्शन अथवा सप्त सुवर्णमय कुंचीओ		।=	,,	१२८
४	सेवानो मार्ग				
५	आदर्श पुरुष	,,	।=	,,	१२०
६	जगद्गुरुनु आगमन	,,	–	,,	३०

हिन्दी साहित्य ग्रन्थावलीके नियम

(१) यह ग्रन्थावली प्रतिमास प्रकाशित होती रहेगी।

(२) वार्षिक मूल्य २) रु० रखा गया है।

(३) किसी भी महीनेमें ग्राहक हो सकेंगे परन्तु वह शुरू वर्षसे ग्राहक समझा जावेगा और उसको पिछली सर्व पुस्तकें भेजी जावेंगी।

(४) जिन्हे इस ग्रन्थावलीकी पुस्तक हर महीनेकी १५ तारीख तक न मिले तो पहिले पोष्ट अफिससे दरियाफ्त करें और पश्चात् यहांपर सुचित करें।

(५) जिन्हे अपनी पुस्तकें ग्रन्थावली द्वारा प्रकाशित करना हो वे यहांपर भेजें। सम्पादककी पसंदगी पर उस ग्रन्थको प्रकाशित करनेकी टर्म (शर्तें) तै होंगी।

(६) इस ग्रन्थावलीमें जिन्हे विज्ञापन छपवाना हो या बंटवाना हो तो पत्र द्वारा तै करें।

(७) परिवर्तनके मासिक पत्र व पुस्तक आदि 'सम्पादक हिन्दी-साहित्य ग्रन्थावली—आबूरोड' के पतेसे भेजें।

(८) जो सज्जन रु० २५) एक मुश्त देंगे वे इस ग्रन्थावलीके सहायक समझे जायगे और एक वर्ष तक ग्रन्थावलीकी सर्व पुस्तकें विना मूल्य दी जावेंगी।

(९) जो सज्जन रु० १००) एक मुश्त देंगे वे इसके रक्षक समझे जांयगे और ग्रन्थावलीके सर्व ग्रन्थ विना मूल्य दिये जांएगे।